कविग्राम

वर्ष 3, अंक 2, फरवरी 2022

प्रेम बिना सब सून

VALENTINE DAY EDITION

कविग्राम

वर्ष 2, अंक 12, दिसम्बर 2021

परामर्श मण्डल
सुरेन्द्र शर्मा
अरुण जैमिनी
विनीत चौहान

सम्पादक
चिराग़ जैन

सह सम्पादक
मनीषा शुक्ला

कला सम्पादक
प्रवीण अग्रहरि

प्रकाशन स्थल
नई दिल्ली

प्रकाशक
कविग्राम फाउण्डेशन

उपरोक्त सभी पद मानद तथा अवैतनिक हैं।
कविग्राम में प्रकाशित लेख तथा कविताओं में व्यक्त विचार उनके रचयिताओं की निजी राय है।

मूल्य : निःशुल्क

आवरण सज्जा : प्रवीण अग्रहरि

इंटरनेट लिंक

पत्रिका में जहाँ भी ऐसा चिह्न बना है वह एक इंटरनेट लिंक है उसे स्पर्श करने पर, संबंधित पृष्ठ खुल जाएगा

इंटरनेट लिंक

kavigram.com
TheKavigram@gmail.com
kavigramfoundation
facebook.com/kavigram
youtube.com/c/KaviGram
8090904560
thekavigram
thekavigram

भीतर के पृष्ठों पर

सम्पादकीय / प्रेम बिना सब सून... / चिराग़ जैन / 04
आवरण कथा / या में दो न समाय / चिराग़ जैन / 05
वटवृक्ष / ठहरे हुए पानी में / माया गोविन्द / 10
गुलमोहर / मुझको माफ़ करना / कुँअर बेचैन / 11
गुलमोहर / वो अहसास तुम्हीं ले जाओ / विष्णु सक्सेना / 12
फुलवारी / प्यार की बात / चन्दन राय / 13
फुलवारी / प्रणय गीत / स्वयम् श्रीवास्तव / 15
विनोद / कवि न कभी बूढ़ा होता है / गोपालप्रसाद व्यास / 16
विनोद / मृगतृष्णा है प्यार / सुरेन्द्र दुबे / 19
उत्साह / निभाना ही कठिन है / गोपालदास नीरज / 20
लोक-लालित्य / मेले में खोई गुजरिया / हरिवंशराय बच्चन / 21
ग़ालिब की गली / मेरे वजूद के अन्दर / परवीन शाक़िर / 22
प्रेम-प्रहसन / लव इन हरियाणा / अरुण जैमिनी / 23
कवि-कुनबा कलैण्डर / फरवरी / 24
श्रद्धांजलि / श्री धर्मेन्द्र सोनी तथा श्री जगदीश अवस्थी / 25
कवि-सम्मेलन संग्रहालय / अल्हड़ बीकानेरी जी के अन्तिम शब्द / 26
धारदार / प्रेम और अन्तर्विरोध / हरिशंकर परसाई / 27
कोकिला कुल / विद्यावती कोकिल / सोनरूपा विशाल / 31
कवितैव कुटुम्बकम / मास्को जाने का पूर्व-रंग / प्रो अशोक चक्रधर / 34
रपट / सरला नारायण ट्रस्ट का वार्षिक समारोह / 38

बिन कहे सुनाई दे तो जानिए वो प्यार है
हो न हो दिखाई दे तो जानिए वो प्यार है

-मधुमोहिनी उपाध्याय

प्रेम बिना सब सून...

प्रेम को किसी एक भाव तक सीमित करना प्रेम के विरुद्ध किया गया सबसे बड़ा षड्यन्त्र है। प्रेम का अस्तित्व ही उसके असीमित होने में है। हानि-लाभ, सही-ग़लत, उचित-अनुचित और नैतिक-अनैतिक की सीमाओं से परे घटित होने वाला 'गूंगे के गुड़' जैसा एक अनुभव है प्रेम। कुछ ऐसा जहाँ एक क्षण के लिए पूरा जीवन दांव पर लगाना अखरता नहीं है। कुछ ऐसा, जहाँ एक व्यक्ति का अपनत्प पूरी सृष्टि की शत्रुता से अधिक मूल्यवान लगने लगता है। कुछ ऐसा, जहाँ मिर्ज़ा से मिलने की ललक में सोहनी को न तो चेनाब का चढ़ता हुआ पानी दिखाई देता है, न ही अपने घड़े का कच्चापन। कुछ ऐसा, जहाँ दशरथ माँझी अपना एक पूरा जीवन पर्वत काटने में ख़र्च कर देता है।

ऐसा कौन-सा आनन्द है इस प्रेम में कि मीरा जैसी विदुषि, ईश्वर और प्रेमी में अन्तर करना आवश्यक नहीं समझतीं। ऐसी कौन-सी अनुभूति है इस ढाई आखर में कि जिस प्रेमी को पूरी दुनिया पागल समझ रही होती है, वह अकेला पूरी दुनिया को पागल समझ रहा होता है। ऐसा क्या मिलता है प्रेम की इन वीथियों में कि इस राह पर चलनेवाला कोई भी शख़्स उसे हिक़ारत से देख रही दुनिया के समक्ष अपना पक्ष तक रखना आवश्यक नहीं समझता।

यकायक देखें तो अहसास होता है कि ईश्वर की खोज में निकलने वालों की बात-व्यवहार और प्रेम में पड़े हुए व्यक्तित्वों की अदाओं में काफ़ी साम्य है। दोनों ही स्थितियों में अभीष्ट की प्राप्ति के लिए भूख और नीन्द को अनदेखा कर दिया जाता है। दोनों ही रास्तों पर चलने वाले राही को लोक के मापदण्डों पर असफल सिद्ध करना बहुत आसान हो जाता है।

कविग्राम का यह अंक प्रेम की इन्हीं अकथ अनुभूतियों को समर्पित है। यह अंक इशारा भर है यह समझने का कि प्रेम की भव्यता किसी एक संज्ञा, किसी एक रिश्ते, किसी एक मान्यता और किसी एक प्रकार में बांधना एक ऐसा पागलपन है जिसे कम-से-कम प्रेम नहीं कहा जा सकता। इस अंक के किसी पृष्ठ को पलटते हुए आपको आपका कोई अनकहा लम्हा याद आ जाए तो इसे हमारी सफलता मानियेगा।

चिराग़ जैन

या में दो न समाय

चिराग़ जैन

सीमित संसाधनों में असीमित सुख भोगने का साधन है- प्रेम। भौतिकता और नैतिकता; इन दोनों की कुण्डली से मुक्त होकर निस्पृह विचरण का निमित्त है- प्रेम। क्रोध, मान, माया और लोभ -इन चारों से रहित होकर निश्छल हो जाने की अनुभूति है- प्रेम। अमूर्त को देख लेने की कला है- प्रेम।

प्रेम के पथ पर भाव ही भाव हैं; वहाँ अभाव जैसा कुछ है ही नहीं। यही कारण है कि जिसने प्रेम को जिया वह भावुक हो उठा।

प्रेम के पथ पर भाव ही भाव हैं; वहाँ अभाव जैसा कुछ है ही नहीं। यही कारण है कि जिसने प्रेम को जिया वह भावुक हो उठा। जिसने प्रेम को भोगा, वह आनन्दित हो गया। जिसने प्रेम को सुना, वह मौन हो गया। यही मौन प्रेम की गहनतम अनुभूति का पाथेय है।

जिसने सर्वश्रेष्ठ को सुन लिया, उसे उसमें अपनी आवाज़ मिलाने का ध्यान ही नहीं आ सकता। मुँह में गुड़ की डली घुल जावे, फिर कौन मूर्ख उसका स्वाद बताने में रस नष्ट करेगा! हाँ, उसके मुखमण्डल की भंगिमा का आलोक देखकर अन्यान्य लोग उसे अभिव्यक्त करने का अनुमान अवश्य लगाते हैं। लेकिन यह केवल अनुमान भर है।

प्रेम की अनुभूति तो पूर्णता की अनुभूति है। वहाँ कोई उद्देश्य शेष रह ही नहीं जाता। यश-अपयश; स्वीकृति-अस्वीकृति.. ये सब उस अनुभूति

से पूर्व के चिंतन मात्र हैं। जिसने पा लिया; वह तो घुल गया उसमें। हम इधर बैठे अनुमान लगाते रह गए। जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैंठ... वह तो गहरे पानी पैंठ गया। और हम बावरे किनारे बैठकर लिखते रह गये कविता। बूझते रह गये पहेलियाँ। गढ़ते रह गये परिभाषा।

मीरा तो विलीन हो गयी। और हम इस पहेली में उलझे रह गये कि उसकी गुनगुनाहट 'भक्ति' है या 'शृंगार'। सूर तो बिना आँखों के उसे देखकर निहाल हो लिये और हम उनकी रचनाओं में उसे ढूंढते रह गये। कबीर ने कुछ लिखा थोड़े ही। वह तो बावरा-सा उससे बतियाते हुए बड़बड़ाता रहा। और हमने उस बड़बड़ाहट को लिखकर दावा कर दिया कि हमने कबीर को सहेज लिया।

यह सब हमारा अंधविश्वास है। प्रेम की अनुभूति हम तक कभी आयी है तो हमने उसे अपनी व्यस्तताओं की चादर से ढँक दिया है। ऐसा नहीं है कि हमने प्रेम को जिया नहीं है। हमारे सम्मुख भी ऐसे अवसर अवश्य आए हैं कि प्रेम का अथाह सागर बाँहें फैलाये हमें समेटने को द्वार तक चलकर आया। लेकिन इस क्षण किसी ने बताया कि तुम पागल हो गये हो, और हमने पैर पीछे हटा लिये। यही तो अवसर था पागल हो जाने का। लेकिन हमें तो किसी ने समझाया और हम समझ गये... हम जैसे समझने को तैयार ही बैठे थे। समझने को तैयार ही बैठे थे। ...उफ़! यही समझना तो ख़तरनाक हो गया। इसी अवसर पर तो बुल्लेशाह हो जाने की ज़रूरत थी। ...बुल्ले नू समझावण आइयां, बहना तें परजाइयां।

अच्छा हुआ कि बुल्लेशाह नहीं समझे। समझ जाते तो गये थे काम से। उन्होंने उस क्षण में अपने प्रेम की गोद में बैठकर बेफ़िक्री का उद्घोष कर दिया- 'बुल्ला की जाणा मैं कौन?' इस क्षण में समझाने वाले से उसकी पहचान नहीं पूछनी होती। यह क्षण तो ख़ुद को तलाशने का क्षण है। और जब प्रेम हमें चारों ओर से घेर ले तो बेफ़िक्री से गा उठो- "रब्ब दीआं बेपरवाहियां।"

बुल्लेशाह बहनों और परजाइयों की बात समझना तो चाहता है, लेकिन वो उस बुल्लेशाह को पहचान नहीं पा रहा है जिसे उनकी बात समझ आ सके। यहाँ, जहाँ वह पहुँच गया है, वहाँ बहुत सारे बुल्लेशाह हैं। बल्कि यूँ कहें कि सारे ही बुल्लेशाह हैं। बिल्कुल एक जैसे। यहाँ कोई दूसरा है ही नहीं। इसलिए इनमें से आपकी बात समझनेवाला बुल्लेशाह ढूंढा नहीं

जा सकता। क्योंकि वहाँ तो सब एक ही हैं। ...प्रेम गली अति साँकरी या में दो न समाय। फिर तो सभी अंतर मिट जाते हैं। स्त्री-पुरुष; जाति-धर्म; देह-विदेह; भक्त-भगवान सब एक हो जाते हैं। फिर कृष्ण, राधा के वस्त्र पहनकर नाच सकते हैं। फिर भगवान भी भक्त के पीछे दौड़ सकते हैं... पीछे-पीछे हरि फिरें।

यह सब शब्दातीत है। यह सब अमूर्त है। यह सब निराकार है। जाति, कुल, गोत्र, लाभ, हानि, नियम, युग, देश, धर्म... सबकी सीमाओं के पार। और इसे पाने के लिये कहीं जाने की भी ज़रूरत नहीं पड़ती। यह तो ठीक वहीं तक चलकर आता है, जहाँ आप उपस्थित हैं। कहीं जाकर या कहीं होकर, इसे पा लेने की बातें कोरी अफ़वाह हैं।

यह इतना सहज है कि इसके अनुमान भर पर जो साहित्य रचा गया, उससे रस के अजस्र स्रोत फूट पड़े। प्रेम की समस्त कविताएँ इस अकथ अनुभूति का अनुमान भर हैं। यूँ समझ लो कि मिर्ज़ा के विश्वास पर चेनाब की धार में उतरने वाली सोहनी पार हो गयी और हम उसके कच्चे घड़े के साथ डूब गये। महसूस करो, कि जब उस डूबने की कथा में हमें इतना रस मिल रहा है तो जो पार हो गयी, उसको क्या मिला होगा!

हम तब से अब तक कहते फिर रहे हैं कि सोहनी कच्चे घड़े के भरोसे चेनाब में उतर गयी और डूब गयी। यह हमारी आँखों के द्वारा बोला गया झूठ है। भला घड़े के भरोसे कोई चढ़ती नदी की धार में उतरता है। ये नदी की धार, ये कच्चा घड़ा और ये डूबती हुई सोहनी... ये सब हमारी आँखों द्वारा फैलाई गई अफ़वाह हैं। नदी कहीं बाहर थी ही नहीं। नदी तो सोहनी के भीतर थी। उत्ताल तरंगों के ज्वार का वेग। प्रेम का अथाह सागर सोहनी के मन में लहरा उठा होगा। ...इस सागर से पार उतरने के लिए कच्चे घड़े की नहीं, पक्के विश्वास की आवश्यकता होती है। उस दिन उस पार मौजूद मिर्ज़ा की आँखों में वह विश्वास दिखा होगा सोहनी को, और

एक बार यह विश्वास दिख जावे, फिर घड़ा फूट सकता है, लेकिन विश्वास नहीं टूट सकता। प्रेम का विश्वास अनब्रेकेबल होता है। पूरा ब्रह्मांड थर्रा उठे तो भी प्रेम के विश्वास का पाँव नहीं हिल सकता।

इसीलिए सोहनी को डूबते देखकर जो साहित्य रचा गया उसे पढ़ने कभी न तो सोहनी आई, न महिवाल। वो तो उतर गये पार। और हम टूटे घड़े के टुकड़े उठाकर साहित्य रचते रह गये। 'बाणोच्छिष्टम् जगत्सर्वम्' - संस्कृत की इस उक्ति को जब मैंने पढ़ा तब समझ न सका था। लेकिन जब मैंने बाणभट्ट का साहित्य पढ़ा तो इसका अर्थ ज्ञात हुआ। आज यही उक्ति मैं प्रेम के संदर्भ में कहता हूँ -"प्रेमोच्छिष्टम् सरस सर्वम्!" जो भी कुछ सरस है, वह प्रेम की जूठन है। मूल स्रोत तो कहीं पुण्डरीक की प्रतीक्षा में बसा हुआ है। वह तो कादम्बरी के सौंदर्य में बिंधा धरा है। और हम पत्रलेखा-सी परिचारिका की भाँति प्रयासरत हैं।

लेकिन यह प्रयास भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। प्रेम की ये कविताएँ भी किसी-किसी क्षण आपके भीतर स्थित अनुभूति की इस कुंडलिनी को जागृत कर सकती हैं। इन्हीं प्रयासों में कभी कोई देवल आशीष लिख बैठता है कि 'मैंने धरती को दुलराया, तुमने अम्बर चूम लिया।' यह साधारण पंक्ति नहीं है। यह लहरों में समाती किसी सोहनी के उस पार उतर जाने की गवाही का प्रयास है। इन्हीं प्रयासों में कभी कोई महादेवी वर्मा कह लेती हैं कि 'जो तुम आ जाते एक बार, कितनी करुणा, कितने संदेश, पथ में बिछ जाते बन पराग' -यह पंक्ति भी साधारण नहीं है। यह शबरी की प्रतीक्षा में व्याप्त राम के विश्वास की मुहर है। यह उस एक क्षण की यूएसपी है, जिसके लिए कोई जीवन भर बेर चुन-चुन कर प्रतीक्षा कर लेता है।

इन्हीं प्रयासों में माया गोविंद लिख पाती हैं कि 'आशाएँ अलख जगाती हैं, बीमार कल्पना के द्वारे।' -यह पंक्ति प्रेम की अनुभूति का कुछ अधिक स्पष्ट झरोखा है। कल्पना की बीमारी को भाँप कर आशाओं की अलख देखने में कवयित्री सफल हुई हैं। प्रेम के महीन परत को उघाड़ कर देख लेने में कवयित्री सफल हुई हैं।

यह परत शृंगार की रचनाओं में ही उघड़ पाए... ऐसा कतई आवश्यक नहीं है। यह कहीं भी सामने आ जाती है। क्षण मात्र के लिए जब 'वह तोड़ती पत्थर' में भी यह परत उघड़ती दिखाई देती है तो इसको जीनेवाले

निराला की आँखें यकायक लाल होते हुए भीग जाती हैं। लेकिन 'सरोज-स्मृति' के निराला की आँखें यकायक लाल नहीं होतीं, उनके अश्रुओं का रंग धीरे-धीरे गुलाबी होता है और फिर उनका मन नीला पड़ जाता है।

पर ये सभी रंग जिस इंद्रधनुष से फूट रहे हैं, वह सतरंगा इन्द्रधनु प्रेम के क्षितिज पर ही उभरता है। जिस रचनाकार ने एक बार इस क्षितिज पर टकटकी लगा दी, उसके लिये फिर रस की कोई कमी न रही। कल्पना के पंख लगाकर स्वयं को विहग कर लेना जिसने सीख लिया, उसी को प्रेम का विहंगम दृश्य देखना नसीब हो सका। फिर मेघदूत का यक्ष अपने चारों ओर विस्तृत प्रकृति में प्रिया के दर्शन कर पाता है। फिर मेघ के हाथों संदेशा भेजा जा सकता है। फिर वाल्मीकि आश्रम में बैठकर यह अनुमान किया जा सकता है कि द्रोणाचल से फूटते झरनों का दृश्य कैसा रहा होगा। फिर कलयुग में बैठकर यह भाँपा जा सकता है कि वाटिका में राम से नयन मिलने पर सीता कैसे लजा गयी होंगी। फिर बेर की कँटीली झाड़ियों से जूठी मिठास सहेजकर प्रेम के अपूर्व बिम्ब रचे जा सकते हैं। फिर विदुरानी खाद्य और अखाद्य का भेद भूल सकती हैं।

फिर हवा के स्पर्श से कँपकँपाती पाँखुरी की आवाज़ स्पष्ट सुनाई देने लगती है। फिर किसी मीठी याद में गड़ा तिनका बरसों बाद भी कविता की याद में चुभ सकता है। फिर देवता के गुनाह में भी पारलौकिक प्रेम के दर्शन किये जा सकते हैं। फिर सब कुछ देखा जा सकता है। फिर सब कुछ जाना जा सकता है।

हज़ार कवि प्रेम के इस मार्ग पर चलते हैं तो उनमें से कोई एकाध ही देह के पार पहुँचकर प्रेम-वैभव तक पहुँचने वाली राह को स्पर्श कर पाते हैं। और इस राह को स्पर्श करने वाले हज़ारों कवियों में कोई एकाध ही विदेह के भी पार पहुँचकर प्रेम को स्पर्श करने में सफल होता है। और ये एकाध ही कबीर, मीरा, सूर, बुल्लेशाह होकर अपनी अनुभूतियों की गूंज से युग-युग तक प्रेम का स्मरण कराते रहते हैं। चिराग़ जैन

माया गोविन्द

ठहरे हुए पानी में

ठहरे हुए पानी में कंकर न मार साँवरी
मन में हलचल-सी मच जायेगी बावरी

मेरे लिये है तू अनजानी
तेरे लिये हूँ मैं बेगाना
अनजाने ने बेगाने का
दर्द भला कैसे पहचाना
जो इस दुनिया ने ना जाना
ठहरे हुए पानी में कंकर ना मार साँवरी
मन में हलचल-सी मच जाएगी बावरी

सब फूलों के हैं दीवाने
काँटों से दिल कौन लगाये
भोली सजनी मैं हूँ काँटा
क्यों अपना आँचल उलझाये
रब तुझको काँटों से बचाये
ठहरे हुए पानी में कंकर ना मार साँवरी
मन में हलचल-सी मच जाएगी बावरी

तुम ही बताओ कैसे बसेगी
दिल के अरमानों की बस्ती
ख़्वाब अधूरे रह जायेंगे
मिट जायेगी इनकी हस्ती
चलती है क्या रेत पर कश्ती
ठहरे हुए पानी में कंकर ना मार साँवरी
मन में हलचल-सी मच जाएगी बावरी

माया गोविन्द

कुँअर बेचैन

मुझको माफ़ करना

कल समय की व्यस्तताओं से निकालूंगा समय कुछ
फिर भरूंगा ख़ुद तुम्हारी मांग में सिन्दूर
मुझको माफ़ करना

आज तो इस वक़्त काफ़ी देर ऑफिस को हुई है
हाँ ज़रा सुनना वो मेरी पेंट है ना
वो फटी है, जो अकेले पाँयचों पर
तुम ज़रा उसमें लगाकर चन्द टाँके
शर्ट के टूटे बटन भी टाँक देना
इस तरह से, जो नयी हर कोई आँके
कल थमे वातावरण से, मैं निकालूंगा प्रलय कुछ
ले चलूंगा फिर तुम्हें इस भीड़ से भी दूर
मुझको माफ़ करना
आज तो इस वक़्त काफ़ी देर, ग्यारह पर सुई है

क्या कहा, है आज पप्पू का जन्मदिन
तुम सुनो, ये बात पप्पू से न कहना
और दिन भर तुम उसी के पास रहना
यदि करे तुमको परेशां, मारना मत
और हाँ, तुम भी कहीं मन हारना मत
कल पराजय के जलधि से, मैं निकालूंगा विजय कुछ
फिर मनायेंगे जन्मदिन की ख़ुशी भरपूर
मुझको माफ़ करना
आज तो ये जेब भी मेरी फटेपन ने छुई है

कुँअर बेचैन

अहसास तुम्हीं ले जाओ

विष्णु सक्सेना

फूलों को तुम लेते जाओ, काँटों को मैं रख लेता हूँ
मेरी मुस्कानें तुम रख लो अश्क़ों को मैं रख लेता हूँ

कितना अच्छा लगता था तब
जब मौसम था साथ हमारे
मेहंदी की ख़ुश्बू में बसकर
रंग देते थे हाथ तुम्हारे
वो अहसास तुम्हीं ले जाओ यादों को मैं रख लेता हूँ
मेरी मुस्कानें तुम रख लो अश्क़ों को मैं रख लेता हूँ

आसमान के चन्दा-तारे
सब हैं अब तो सखा हमारे
मेरे संग विरह में जलते
जुगनू भटका करते सारे
नीन्दें तुमको सौंप चुका हूँ, सपनों को मैं रख लेता हूँ
मेरी मुस्कानें तुम रख लो अश्क़ों को मैं रख लेता हूँ

अन्दर तो इक सन्नाटा है
बाहर है गुमसुम-सा उपवन
थोथा-थोथा-सा लगता है
अब तो हुआ निरर्थक जीवन
शब्दों की माला तुम पहनो, अर्थों को मैं रख लेता हूँ
मेरी मुस्कानें तुम रख लो अश्क़ों को मैं रख लेता हूँ

विष्णु सक्सेना

प्यार की बात

चन्दन राय

बस लुटाता रहा हूँ लिया कुछ नहीं
आप कहते हैं मैंने किया कुछ नहीं

प्यार की बात होने से क्या फ़ायदा
अब मुलाक़ात होने से क्या फ़ायदा
सूखकर जब धरा आज बंजर हुई
तब ये बरसात होने से क्या फ़ायदा
कैसे मानूँ कि सब कुछ है संसार में
मैंने ढूंढा बहुत, पर मिला कुछ नहीं
बस लुटाता रहा हूँ लिया कुछ नहीं

मेरे हक़ में नहीं, फ़ैसला है तो क्या
एक मुझको सभी ने छला है तो क्या
अब तो चुपचाप ही सिर्फ़ रहता हूँ मैं
आप से भी यही बात कहता हूँ मैं
हाले-दिल भी बताना नहीं ठीक है
कोई पूछे तो कह दो- हुआ कुछ नहीं
बस लुटाता रहा हूँ लिया कुछ नहीं

रूप है इस सिरे, प्रेम है उस सिरे
कोई सपनों की गलियों में कब तक फिरे
मन के आकाश में दुःख के बादल घिरे
सिर्फ़ काग़ज़ पे दो बून्द आँसू गिरे
प्रेम करता है वो तो समझ जायेगा
मैंने ख़त में तो वैसे लिखा कुछ नहीं
बस लुटाता रहा हूँ लिया कुछ नहीं

बद्दुआ का असर लग रहा है मुझे
कितना मुश्किल सफ़र लग रहा है मुझे
सब अन्धेरे में मुझको गये छोड़कर
किससे बोलूँ कि डर लग रहा है मुझे
थक गया इस कदर नींद कब लग गयी
मैं कहाँ सो गया ये पता कुछ नहीं
बस लुटाता रहा हूँ लिया कुछ नहीं

रात कुछ इस तरह से बिताता हूँ मैं
नींद लगती है तो जाग जाता हूँ मैं
सिर्फ़ तुमको ही प्रियतम सुनाता हूँ मैं
बन्द होठों से जब गीत गाता हूँ मैं
मैंने तुमसे तो चन्दन बहुत कुछ कहा
ये अलग है कि तुमने सुना कुछ नहीं

चन्दन राय

प्रणय गीत

रात कल कंगन खनकने की वजह से
नव-वधू नज़रें बचाकर चल रही थी
कोयले का आँच से परिचय हुआ था
देह सारी तमतमाकर जल रही थी

देह पर लिक्खी हुई थी छेड़ख़ानी और शरारत
और उलझे केश चुगली कर रहे थे मौन होकर
भाल से भटकी हुई बिन्दी गवाही दे रही थी
मूक सहमति दी पलक ने लाज के परदे गिराकर
इक झिझक ने लांघ ली दहलीज कल से
आँख में फिर आस मीठी पल रही थी

स्वयम् श्रीवास्तव

मौन, बिल्कुल मौन हो चुपचाप सिरहाने खड़ा था
शब्द बनकर आरती स्वर कान में रस घोलते थे
वह अधर ऐसे सटे दूजे अधर से क्या बतायें
जो अधर इक-दूसरे से अब तलक ना बोलते थे
रात की रंगत गुलाबी हो गई कल
चांदनी सिन्दूर-सा कुछ मल रही थी

तार वीणा के छुए पहली दफ़ा जैसे किसी ने
कसमसाहट की उसी धुन पर सवेरे झूमती है
और पसरा है सुकूं चेहरे पे उसके बेतहाशा
जीत जैसे जीतकर भी हार का मुख चूमती है
ज़िन्दगी की सेज में करवट नयी थी
अग्नि सारी बर्फ़ होकर गल रही थी

स्वयम् श्रीवास्तव

गोपालप्रसाद व्यास

कवि न कभी बूढ़ा होता है

हाय, न बूढ़ा मुझे कहो तुम!
शब्दकोश में प्रिये, और भी
बहुत गालियाँ मिल जाएंगी
जो चाहे सो कहो, मगर तुम
मेरी उमर की डोर गहो तुम!
हाय, न बूढ़ा मुझे कहो तुम!

क्या कहती हो- दाँत झड़ रहे?
अच्छा है, वेदान्त आयेगा।
दाँत बनानेवालों का भी
अरी भला कुछ हो जायेगा।
बालों पर आ रही सफेदी,
टोको मत, इसको आने दो।
मेरे सिर की इस कालिख को
शुभे, स्वयं ही मिट जाने दो।
जब तक पूरी तरह चांदनी
नहीं चांद पर लहरायेगी,
तब तक तन के ताजमहल पर
गोरी नहीं ललच पायेगी।
झुकी कमर की ओर न देखो
विनय बढ़ रही है जीवन में,

तन में क्या रक्खा है, रूपसि,
झाँक सको तो झाँको मन में।
अरी पुराने गिरि-शृंगों से
ही बहता निर्मल सोता है,
कवि न कभी बूढ़ा होता है।

मेरे मन में सुनो सुनयने
दिन भर इधर-उधर होती है,
और रात के अंधियारे में
बेहद खुदर-पुदर होती है।
रात मुझे गोरी लगती है,
प्रात मुझे लगता है बूढ़ा,
बिखरे तारे ऐसे लगते
जैसे फैल रहा हो कूड़ा।
सुर-गंगा चंबल लगती है
सातों ऋषि लगते हैं डाकू
ओस नहीं, आ रहे पसीने,
पौ न फटी, मारा हो चाकू।
मेरे मन का मुर्गा तुमको
हरदम बांग दिया करता है,
तुम जिसको बूढ़ा कहतीं, वह
क्या-क्या स्वांग किया करता है
बूढ़ा बगुला ही सागर में
ले पाता गहरा गोता है।
कवि न कभी बूढ़ा होता है।

भटक रहे हो कहाँ?
वृद्ध बरगद की छाँह घनी होती है
अरी, पुराने हीरे की क़ीमत
दुगुनी-तिगुनी होती है
बात पुरानी है कि पुराने
चावल फार हुआ करते हैं
और पुराने पान बड़े ही

लज़्ज़तदार हुआ करते हैं
फर्म पुरानी से 'डीलिंग'
करना सदैव चोखा होता है
नई कंपनी से तो नवले
अक्सर ही धोखा होता है
कौन दाँव कितना गहरा है
नया खिलाड़ी कैसे जाने
अरी, पुराने हथकंडों को
नया बांगरू क्या पहचाने
किए-कराए पर नौसिखिया
फेर दिया करता पोता है।
कवि न कभी बूढ़ा होता है।

वर्ष हजारों हुए राम के
अब तक शेव नहीं आई है!
कृष्णचंद्र की किसी मूर्ति में
तुमने मूंछ कहीं पाई है?
वर्ष चौहत्तर के होकर भी
नेहरू कल तक तने हुए थे
साठ साल के लालबहादुर
देखा गुटका बने हुए थे
अपने दादा कृपलानी को
कोई बूढ़ा कह सकता है?
बूढ़े चरणसिंह की चोटें,
कोई जोद्धा सह सकता है?
मैं तो इन सबसे छोटा हूँ
क्यों मुझको बूढ़ा बतलातीं?
तुम करतीं परिहास, मगर
मेरी छाती तो बैठी जाती।
मित्रो, घटना सही नहीं है
यह किस्सा मैना-तोता है।
कवि न कभी बूढ़ा होता है।

गोपालप्रसाद व्यास

चित्र साभार: हिन्दी भवन न्यास, दिल्ली

सुरेन्द्र दुबे

मृगतृष्णा है प्यार

वैलेंटाइन डे मना, था मैं भी तैयार
चला प्यार की ओट में, करने नया शिकार
देख इक सुन्दर लड़की
भावना मेरी भड़की

मैंने लड़की से कहा, देकर के इक फूल
आ जा मेरी माधुरी, मैं तेरा मक़बूल
मेरे सपनों की रानी
बनाए प्रेम कहानी

ना ना जी उसने कहा, ख़ूब पड़ेगी मार
पहलवान की बहिन से, हुआ आपको प्यार
अगर यह फूटा भंडा
यहीं कर देगा ठंडा

मैंने वापस ले लिया, उससे अपना फूल
मुझको दिखी अधेड़ सी, इक महिला अनुकूल
फूल दे हृदय टटोला
प्यार से मैं ये बोला

ज्योत रहा हूँ मैं तुझे, बन जा मेरी फ्रैंण्ड
तू भी सेकंड हैण्ड है, मैं भी सेकंड हैण्ड
साधना मेरी डोले
आज तू मेरी होले

पर मेरी तक़दीर में, लिखी हुई थी खोट
लिपट गई खिसका लिए, जेब से सारे नोट
चोट पैसों की खाई
तभी घरवाली आई

वैलेंटाइन डे यहाँ, है काँटो का हार
काम साधकों के लिए, मृगतृष्णा है प्यार
प्यार एक कठिन तपस्या
वासना जटिल समस्या

सुरेन्द्र दुबे

गोपालदास नीरज

निभाना ही कठिन है

प्यार तो करना बहुत आसान प्रेयसि
अन्त तक उसका निभाना ही कठिन है

है बहुत आसान ठुकराना किसी को
है न मुश्किल भूल भी जाना किसी को
प्राण-दीपक बीच साँसों को हवा में
याद की बाती जलाना ही कठिन है

स्वप्न बन क्षण भर किसी स्वप्निल नयन के
ध्यान-मंदिर में किसी मीरा गगन के
देवता बनना नहीं मुश्किल, मगर सब-
भार पूजा का उठाना ही कठिन है

चीख-चिल्लाते सुनाते विश्व भर को
पार कर लेते सभी बीहड़ डगर को
विष-बुझे पर पंथ के कटु कंटकों की
हर चुभन पर मुस्कुराना ही कठिन है

छोड़ नैया वायु-धारा के सहारे
है सभी ही सहज लग जाते किनारे
धार के विपरीत लेकिन नाव खेकर
हर लहर को तट बनाना ही कठिन है

दूसरों के मग सुगम का अनुसरण कर
है बहुत आसान बढ़ना ध्येय पथ पर
पाँव के नीचे मगर मंज़िल बसाकर
विश्व को पीछे चलाना ही कठिन है

वक़्त के संग-संग बदल निज कंठ-लय-स्वर
क्या कठिन गाना सुनाना गीत नश्वर
पर विरोधों के भयानक शोर-गुल में
एक स्वर से गीत गाना ही कठिन है

गोपालदास नीरज

हरिवंशराय बच्चन

मेले में खोई गुजरिया

मेले में खोई गुजरिया,
जिसे मिले मुझसे मिलाये

उसका मुखड़ा
चांद का टुकड़ा
कोई नज़र न लगाये
जिसे मिले मुझसे मिलाये

खोये-से नैना
तोतरे बैना
कोई न उसको चिढ़ाये
जिसे मिले मुझसे मिलाये

मटमैली सारी
बिना किनारी
कोई न उसको लजाये
जिसे मिले मुझसे मिलाये

तन की गोरी
मन की भोरी
कोई न उसे बहकाये
जिसे मिले मुझसे मिलाये

दूंगी चवन्नी
जो मेरी मुन्नी
को लाये कनिया उठाये
जिसे मिले मुझसे मिलाये

हरिवंशराय बच्चन

मेरे वजूद के अन्दर

परवीन शाक़िर

ख़ुश्बू है वो तो छू के बदन को गुज़र न जाये
जब तक मेरे वजूद के अन्दर उतर न जाये

ख़ुद फूल ने भी होंठ किये अपने नीम-वा
चोरी तमाम रंग की तितली के सर न जाये

इस ख़ौफ़ से वो साथ निभाने के हक़ में है
खोकर मुझे ये लड़की कहीं दुख से मर न जाये

पलकों को उसकी अपने दुपट्टे से पोंछ दूँ
कल के सफ़र में आज की गर्द-ए-सफ़र न जाये

मैं किसके हाथ भेजूँ उसे आज की दुआ
क़ासिद-हवा-सितारा कोई उस के घर न जाये

परवीन शाक़िर

लव इन हरियाणा

अरुण जैमिनी

प्रेमी ने प्रेमिका को जैसे ही सीने से लगाया तो प्रेमिका बोली- "तुम्हारा दिल बड़ा कुरकुरा सै।"
प्रेमी बोला- "दिल कुरकुरा कोन्या, तैनै बीड़ी का बंडल तोड़ दिया।"

प्रेमी- "मैं तेरे तै ब्याह करना चाहूँ सूँ।"
प्रेमिका- "ये पुराणा तरीक़ा सै, कुछ नए ढंग तै प्रपोज कर!"
प्रेमी- "क्या तू मेरे छोरे से अपनी चिता में आग लगवाना पसंद करेगी?"

प्रेमी- "अगर तू मेरी ना हुई, तो मैं तुझे किसी और की होने नहीं दूंगा।"
प्रेमिका- "अच्छा, तेरी हो जाऊँगी तो सबकी होण देगा।"

प्रेमी- "जीब तू मेरे जीवन में नहीं थी, तो मेरे जीवन में काले बादल छा रहे थे, इब तू आयी है तो जीवन में कुछ फुहार-सी पड़ी है, कुछ इंद्रधनुष से बने हैं...!"
प्रेमिका- "इब तू मौसम का हाल ही बताता रहेगा या ब्याह की भी बात करैगा?"

अरुण जैमिनी

कवि कुनबा कलैण्डर (फरवरी)

1 फरवरी	जयन्ती	देवकीनन्दन जांगिड़
2 फरवरी	जयन्ती	रमई काका
4 फरवरी	जन्मदिन	सुभाष काबरा
5 फरवरी	पुण्यतिथि	जगदीश पीयूष
6 फरवरी	जयन्ती	कवि प्रदीप
	जयन्ती	श्याम ज्वालामुखी
	पुण्यतिथि	जैमिनी हरियाणवी
7 फरवरी	जन्मदिन	सत्यनारायण सत्तन
8 फरवरी	जन्मदिन	वसीम बरेलवी
	जन्मदिन	रामेन्द्र मोहन त्रिपाठी
	जन्मदिन	अशोक चक्रधर
	पुण्यतिथि	निदा फ़ाज़ली
9 फरवरी	जन्मदिन	प्रियांशु गजेन्द्र
10 फरवरी	जयन्ती	बालकवि बैरागी
	जन्मदिन	मास्टर महेन्द्र
	जन्मदिन	कुमार विश्वास
	पुण्यतिथि	सुदामा पाण्डेय धूमिल
	जन्मदिन	पी के धुत्त
11 फरवरी	पुण्यतिथि	विष्णु विराट
12 फरवरी	जन्मदिन	मधुमोहिनी उपाध्याय
13 फरवरी	जयन्ती	फ़ैज़ अहमद फ़ैज़
	जयन्ती	गोपाल प्रसाद व्यास
15 फरवरी	पुण्यतिथि	मिर्ज़ा ग़ालिब
	जयन्ती	नरेश मेहता
	जन्मदिन	बशीर बद्र
	पुण्यतिथि	सुभद्राकुमारी चौहान
	जन्मदिन	सुरेश अवस्थी
	जन्मदिन	आरिफ़ा शबनम
16 फरवरी	जयन्ती	कैलाश सेंगर
	जन्मदिन	अतुल कनक
17 फरवरी	जन्मदिन	सुनील गाइड
18 फरवरी	जयन्ती	जां निसार अख्तर
19 फरवरी	पुण्यतिथि	खुमार बाराबंकवी

कवि कुनबा कलैण्डर (फरवरी)

20 फरवरी	जयन्ती	राधेश्याम प्रगल्भ
	पुण्यतिथि	भवानी प्रसाद मिश्र
21 फरवरी	जयन्ती	सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
	पुण्यतिथि	महावीर प्रसाद द्विवेदी
	जन्मदिन	दिनेश दिग्गज
22 फरवरी	पुण्यतिथि	जोश मलीहाबादी
23 फरवरी	पुण्यतिथि	ओम प्रभाकर
24 फरवरी	जन्मदिन	समीर
	जन्मदिन	श्याम वशिष्ठ
25 फरवरी	जन्मदिन	किरन जोशी
	जन्मदिन	सुमन दुबे
26 फरवरी	जन्मदिन	कैलाश मण्डेला
	पुण्यतिथि	उदयभानु हंस
27 फरवरी	पुण्यतिथि	इन्दीवर
	पुण्यतिथि	कैलाश सेंगर

विनम्र श्रद्धांजलि

श्री धर्मेन्द्र सोनी
जन्म : 10 जून 1962
निधन : 18 जनवरी 2022

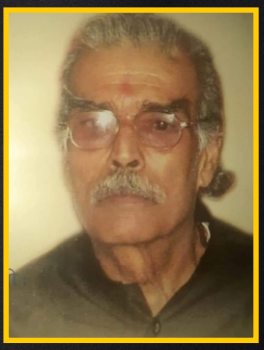

श्री जगदीश अवस्थी
जन्म : 18 अगस्त 1936
निधन : 24 जनवरी 2022

कवि-सम्मेलन संग्रहालय

KAVIGRAM

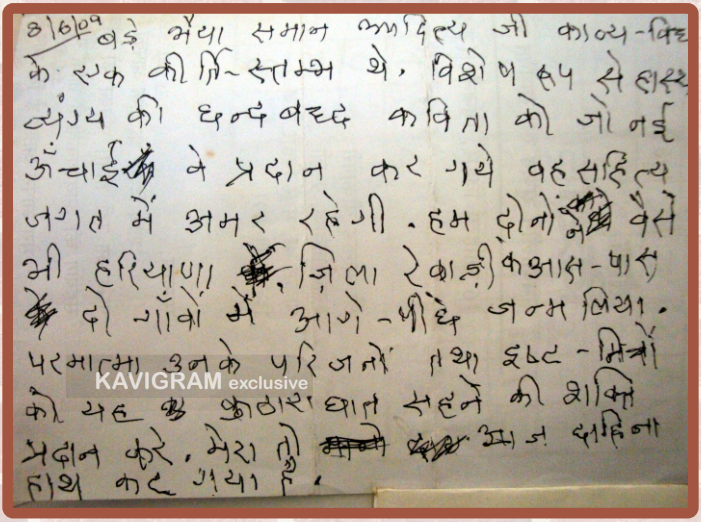

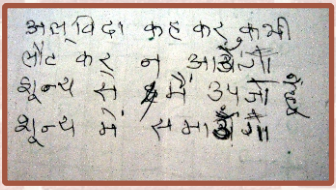

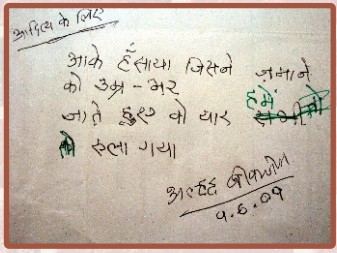

चित्र साभार : श्री अल्हड़ बीकानेरी परिवार

श्री ओमप्रकाश आदित्य की अंतिम यात्रा से लौटकर
श्री अल्हड़ बीकानेरी अस्पताल में भर्ती हो गये और फिर कभी घर नहीं लौटे।
ये तीनों काग़ज़ उनके हाथ से लिखे अंतिम दस्तावेज़ हैं।

कवि-सम्मेलन संग्रहालय में कवि-सम्मेलन के पुराने चित्र, निमन्त्रण पत्र, चिट्ठियाँ, कतरनें तथा अन्य दस्तावेज़ों को संग्रहीत करने का कार्य प्रगति पर है। दाहिनी ओर दिये गये लिंक पर स्पर्श करके आप इस खण्ड के अन्य चित्र देख सकते हैं

कवि सम्मेलन संग्रहालय

प्रेम और अन्तर्विरोध

हरिशंकर परसाई

गुरु लोगों से मैं अभी भी बहुत डरता हूँ। उनके मामलों में दख़ल नहीं देता, पर मेरे सामने पड़े अख़बार की यह ख़बर मुझे भड़का रही है। ख़बर है- एक लड़का रोज़ एक प्रेम-पत्र लिखता था। वे हेडमास्टर के हाथ पड़ गये। उन्होनें उसे स्कूल से निकाल दिया। संवाददाता ने लिखा है- हेडमास्टर साहब के इस नैतिक कार्य की सर्वत्र प्रशंसा हो रही है।

होती होगी। संवाददाता अक्सर स्थानीय स्कूल में पढ़े होते हैं और वे पोस्टमास्टर और हेडमास्टर के बड़े भक्त होते हैं। मैं तो ये कल्पना कर रहा हूँ कि लड़कों को निकाल देने के बाद हेडमास्टर ने क्या किया होगा? वे तुष्ट भाव से अपने कमरे में बैठे होंगे। अपने प्रिय चमचे से कहा होगा- "मस्साब, मुझे अनैतिकता बिल्कुल बर्दाश्त नहीं है। इस मामले में मैं बहुत सख़्त हूँ।" चमचे ने कहा होगा- "मस्साब, आपने बहुत अच्छा किया, जो उसे निकाल दिया। ये आजकल के लड़के बहुत प्रेम करने लगे हैं। हमारी इतनी उम्र हो गयी, बाल-बच्चे हो गये, पर कोई बता दे कि कभी प्रेम किया हो तो!"

ख़ुश होकर हेडमास्टर साहब छिपकर सिगरेट पीने पाखाने मे चले गये होंगे और वे अध्यापक राधाकृष्ण के प्रेम के पद पढ़ाने कक्षा में चले गये होंगे- 'पूछत कान्ह कौन तुम गौरी?' अर्थात् कृष्ण भगवान राधा से पूछते हैं...

सोचता हूँ, गुरु का क्या यही फ़र्ज़ है कि प्रेमपत्र देखा और सज़ा दे दी? पर वे जिन मानवीय आचरण सूत्र से बंधे हैं, उनके हिसाब से कुछ और कर भी नहीं सकते। वे लड़के से ये तो कहते नहीं कि बेटा, तू हम सबसे श्रेष्ठ है। तू रोज़ एक प्रेम-पत्र लिखता है। तुझे धन्य है! पर प्रेम-पत्र बहुत पवित्र चीज़ है। वह हेडमास्टरों के स्पर्श से दूषित हो जाता है। प्रेम और हेडमास्टर की दुश्मनी होती है। भूल से तेरे प्रेम-पत्र हमारे हाथ पड़ गये थे। आगे

सावधानी बरतना, जैसे हम पाखाने में सिगरेट पीते हैं । भले और बुरे में सिर्फ़ ढके और खुले का फ़र्क होता है ।

कोई अध्यापक ऐसा नहीं कहेगा। वह रसखान का पद अलबत्ता रस से पढ़ा देगा- 'तुम कौन-सी पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।' उस ज़माने के ये स्कूल हमारे 'पब्लिक स्कूल' जैसे होंगे, जिनमें कृष्ण जैसे उच्चवार्गीय पढ़ते होंगें। उच्चवार्गीय की 'पाटी' अलग होती है।

यों स्कूल में कुच्छ भी सीखा जा सकता है। मैंने बेईमानी और मिलावट स्कूल में गणित के ज़रिए सीख ली थी। वह सवाल ऐसा होता था - एक ग्वाला 40 पैसे सेर के हिसाब से 15 सेर दूध ख़रीदता है। वह उसमें 10 सेर पानी मिलाकर 30 पैसे सेर के भाव से बेच देता है। बताओ उसे कितना लाभ हुआ? वैसे तो यह सवाल गणित का है पर बेईमानी का लाभ भी बताता है। अभी भी लड़के ऐसे सवाल सीखते हैं और बेईमानों की पीढ़ियाँ पैदा होती जाती हैं।

बेईमानी चाहे सीख लो, प्रेम-पत्र मत लिखो। घृणा-पत्र चाहे जितने लिखो। अध्यापकीय दृष्टि में अक्सर सुखदायी चीज़ें अनैतिक होती हैं। खेल तक बुरा माना जाता है। मैं जब पढ़ता था, तब ऐसे पाठ होते थे- राम अच्छा लड़का है। वह खेलता नहीं है। अध्यापकीय दृष्टि में ज़िन्दगी व्याकरण की पुस्तक हो जाती है।

अध्यापक की पत्नी मायके से भीगा-सा पत्र लिखती है। छोटे भाई से डाक के डब्बे में डलवाती है। कह देती है- "हाथ डालकर देख लेना, कहीं अटका न रह जाए।" जवाब का इंतज़ार करती है। जवाब आता है- "तुम्हारी बहुत याद आती है। हाँ, दो पृष्ठों की चिट्ठी में तुमने व्याकरण की भूलें की हैं। तुम्हारा व्याकरण बहुत कमज़ोर है। वहाँ बहुत समय मिलता होगा। भाइयों से पुस्तकें लेकर अपना व्याकरण ठीक कर लेना।"

अध्यापिका को अपने प्रेमी का पत्र भी मिलता होगा, तो पहली बात उसके मन में यही उठती होगी की 'बड़ी बहनजी' को बताकर लिखनेवाले को डाँट पड़वा दूँ।

एक सीनियर प्रोफ़ेसर साहब ने उस दिन बताया- "कॉलेज में ताज़ा एम ए अध्यापक मेरे विभाग में आया। ख़ूब प्रतिभावान है और सुंदर। एक दिन उसने मुझसे रिपोर्ट की कि दो-तीन दिनों से कोई मेरी साइकल की हवा निकाल देता है। मैंने पता लगाया तो एक लड़की निकली। यों वह बड़ी अच्छी लड़की थी। मगर यह क्या हरक़त? मैंने बुलाकर डाँटा। वह रोने लगी। उस दिन से साइकल की हवा नहीं निकली।"

मगर उस बेवकूफ़ नये लेक्चरर की तो ज़िन्दगी की हवा निकल गई। सीनियर प्रोफ़ेसर को कोई कैसे समझा सकता है कि सर, यह अनुशासन का मामला नहीं है। आप समझेंगे नहीं, क्योंकि आपकी साइकल की हवा कभी नहीं निकली। आपने उस लड़की को मार डाला।

फिर सोचता हूँ, माना यह बड़ी क्रूरता है, पर वे और क्या करते? क्या यह कहते कि हवा बहुत निकल चुकी अब चिट्ठी लिखने की स्टेज आ गई। अध्यापक को ज़रा ज़्यादा खींच दिया। मुझे डर लगने लगा। क़ैफ़ियत देता हूँ। अध्यापक बुरा न मानें। वे ज़िम्मेदार नहीं हैं। वे तो एक फ़ॉर्मूला लागू करनेवाले हैं। बनानेवाले दूसरे हैं, जो सदियों से बनाते रहे हैं। नैतिकता के ये फॉर्मूले बड़े दिलचस्प हैं। जैसे यही कि पाँव छूने से भावनाएँ बदल जाती हैं। -क्यों रे, तू उस औरत को बुरी नज़र से देखता है। उसे आज से बहन मानना! चल, उसके चरण छू। उसने डरकर पाँव छू लिये। नियामक संतुष्ट हो गये की मामला 'पवित्र' हो गया। वे भूल गये कि पाँव शरीर का एक अंग है और उस आदमी की बहुत दिनों की उसे छू लेने की साध पूरी करा दी गई। वह तो रोज़ चरण छू सकता है।

यह जो 'पवित्र' सम्बन्ध वाला मामला हमारे यहाँ चलता है, यह न जाने क्या-क्या करवाता है। बड़ी साँसत में डालता है आदमी को। लड़कियों के कॉलेज के फाटक पर छुट्टी के वक़्त बेचारा भला-सा लड़का खड़ा है। उससे पूछो- क्यों खड़े हो यहाँ? वह घबराकर कहता है- सिस्टर को ले जाना है। और मैंने देखा है, कई बेचारों की कलाई से लेकर कंधे तक राखी बन्धी होती है। लाचारी है। कोई और सूरत रखी ही नहीं है।

मुहल्ले में स्त्री-पुरुष की नज़रों पर डंडा लेकर बैठे रहनेवाले राधा-कृष्ण के प्रेम-विलास के पद आँखें बन्द करके गर्दन हिलाते हुए गद्गद भाव से सुनते हैं - हरे नमः। वह भजन है। राधा और कृष्ण का मामला है। पवित्र है। एक जगह भजन हो रहे थे । भजनिक ने सूरदास का पद

गाया- 'आज हरि नयन उनीन्दे आए!' आगे इसमें रति-चिह्नों का वर्णन है। भक्त डोलते हुए सुन रहे थे। भगत जी ने पूछा- "इस पद में जो है, वह आपको समझ में आता है? वे बोले हाँ-हाँ, राधा-कृष्ण का है। हरि, हरि! गर्दन हिलाने लगे। यही अगर संस्कृत में हो तो और पवित्र हो जाता है। जो समझ में न आए वो पवित्र होता है। कुछ लोग संस्कृत के हर छन्द को प्रभु-प्रार्थना समझते हैं। 'कूटटनी चरितम्' को भी ऐसे सुनेंगे, जैसे प्रार्थना सुन रहे हैं। ऐसे ही कुछ लोग उर्दू के हर शेर को हास्यरस का समझते हैं। शेर सुना और ही-ही करने लगे। भाव चाहे करुण हो। 'क़िस्मत में है मरने की तमन्ना कोई दिन और' -वाह, वाह, तमन्ना। ही-ही-ही-ही!

इधर का यह आदमी अपने को दुनिया में सबसे पवित्र और नैतिकवादी मानता है। ऊपर सब ठीक किए रहता है, भीतर अंतर्विरोध पालता है। अश्लील से अश्लील पद भक्तिभाव से सुनेगा, मगर साधारण आदमी की भाषा में लिखा प्रेम-पत्र पढ़कर भन्ना उठेगा।

यही आदमी कहता है हम कोई क्रांति नहीं करेंगे, क्योंकि क्रांति में हिंसा होती है। हम अहिंसावादी, दयालू, मानवतावादी लोग हैं। हम बुद्ध, महावीर, गांधी के देश के लोग हैं। मगर इसी आदमी ने अब तक बीस लाख हिंदू-मुसलमान दंगे में मार डाले हैं। इतने में दस क्रांतियाँ हो जातीं। यह आदमी पश्चिम के लोगों को लोभी, भौतिकवादी वग़ैरह कहता है। मगर यही निर्लोभी आध्यात्मिक आदमी मक्खन में स्याही सोख और बेसन में 'सोप स्टोन' मिलकर बेचता है। दवा तक में मिलावट करके वह मौत से अपना मुनाफ़ा बढ़ा लेता है।

मगर यह अंतर्विरोध अध्यापक या सुधारक की परेशानी नहीं है। उनका रास्ता सीधा है। वे उचित ही करते हैं। पर मार्क ट्वेन की एक बात मुझे याद आ रही है। उस सिरफ़िरे ने कहा है कि 'आदम ने सेब इसलिए खा लिया कि उसे खाने की मनाही थी। अगर उसे साँप खाने से मना किया होता, तो वह साँप को खा जाता।'

हरिशंकर परसाई

सिद्धि से प्रसिद्धि तक

विद्यावती कोकिल

सोनरूपा विशाल

मुझको तेरी अस्ति छू गयी है
अब न भार से विथकित होती हूँ
अब न ताप से विगलित होती हूँ
अब न शाप से विचलित होती हूँ
जैसे सब स्वीकार बन गया हो
मुझको तेरी अस्ति छू गयी है

ये वो समय था जब पढ़ने-लिखनेवाले लोग ही काव्य मंच की शोभा हुआ करते थे। विद्यापति कोकिल भी एक ऐसी कवियत्री थीं, जिन्हें साहित्य में एक प्रतिष्ठित रचनाकार के रूप में याद किया जाता है। अपने समय की वे बहुत नामचीन कवयित्री मानी जाती थीं। सिद्धि और प्रसिद्धि दोनों उन्हें प्राप्त हुईं।

विद्यावती कोकिल जी का जन्म 26 जुलाई 1914 को मुरादाबाद के हसनपुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था।

गीत की उदात्त लेखिका विद्यावती 'कोकिल' के जीवन का अधिकांश समय प्रयागराज में बीता। आर्यसमाजी तथा देशभक्त परिवार में जन्म लेनेवाली कोकिल जी का स्वयं भी स्वतंत्रता संग्राम में उल्लेखनीय योगदान रहा। इस दौरान उन्होंने कारावास यात्रा भी की। इन्होंने जनहित में अनेक कार्य किये। कोकिल जी का कविता लेखन बचपन

में ही प्रारम्भ हो गया था। स्कूल-कॉलेज में आते-आते वो परिपक्व लिखने लगीं। अखिल भारतीय काव्य-मंचों एवं आकाशवाणी केन्द्रों के माध्यम से इनकी प्रतिभा और विस्तारित हुई और इनका नाम इनकी रचनात्मकता की परिचय बन गया। इन्होंने पांडिच्चेरी के 'अरविन्द आश्रम' में भी समय व्यतीत किया और अरविन्द दर्शन से ये बहुत प्रभावित रहीं। इनके काव्य में भी उनके दर्शन का प्रभाव दिखायी देता है।

विद्यावती 'कोकिल' मूलतः एक गीतकार हैं। मन की सम्वेदनाओं को सहजता और तरलता से व्यक्त कर देना उनके गीतों की विशेषता है। नारी मन की अनुभूतियों को कोमल शाब्दिक परिधान दिया है उनके गीतों ने।

विद्यावती 'कोकिल' की प्रारम्भिक रचनाओं का प्रथम काव्य-संकलन प्रेम और जीवन से ओतप्रोत गीतों का संग्रह था, जो वर्ष 1940 में प्रकाशित हुआ। सन् 1942 ई. में 'माँ' नाम से इनका द्वितीय काव्य-संग्रह सामने आया। सम्पूर्ण विश्व को प्रजनन की एक महाक्रिया मानकर मातृत्व की विकासोन्मुख अभिव्यक्ति एवं लोरियों के माध्यम से 'माँ' में जीव के एक सतत् विकास की कथा का कहना इसकी रचना का उद्देश्य रहा।

सन 1952 में इनकी 'सुहागिन' नाम की कृति प्रकाशित हुई। इस कृति ने विद्यापति 'कोकिल' जी के भीतर के गीतकार के उजाले से पाठकों का परिचय कराया। मन विभोर कर देनेवाले गीत थे इस संग्रह में। इस संग्रह में संकलित मानव-मनोविज्ञान, सत्य की खोज, अच्छाई की आकांक्षा और नारी के अंतर्मन को मुखरित करती रचनाएँ हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

'सुहाग गीत' (लोकगीत संग्रह) सन 1953 में प्रकाशित हुआ। 'पुनर्मिलन' सन 1956 में सामने आया। इन गीतों में कवयित्री ने उस प्रियतम के साक्षात् मिलन का स्पर्श प्राप्त किया है, जिसकी छाया के पीछे वह जीवन भर भागी है। नवम्बर, सन 1957 में प्रकाशित 'फ्रेम बिना तस्वीर' नामक नाटक एक सत्यान्वेषी इंग्लिश कुमारी का नाट्याख्यान है, जिसका घटनास्थल इंग्लैंड है।

'सप्तक' एक विस्तृत भूमिका के साथ अरविन्द की सात कविताओं का मूलयुक्त हिन्दी अनुवाद है, जो सन 1959 में सामने आया।

विद्यावती 'कोकिल' जी का एक गीत-

कौन गाता जा रहा है?

मौनता को शब्द देकर
शब्द में जीवन संजोकर
कौन बन्दी भावना के
पर लगाता जा रहा है
कौन गाता जा रहा है?

घोर तम में जी रहे जो
घाव पर भी घाव लेकर
कौन मति के इन अपंगों
को चलाता जा रहा है
कौन गाता जा रहा है?

कौन बिछुड़े मन मिलाता
और उजड़े घर बसाता
संकुचित परिवार का
नाता बढ़ाता जा रहा है
कौन गाता जा रहा है?

भूमिका में आज फिर
निर्माण का संदेश भरकर
खंडहरों के गिरे साहस
को उठाता जा रहा है
कौन गाता जा रहा है?

फटा बनकर ज्योति-स्रावक
जो कि हिमगिरी की शिखा-सा
कौन गंगाधार-सा
अविरोध बढ़ता जा रहा है
कौन गाता जा रहा है?

मॉस्को जाने का पूर्व-रंग

प्रो. अशोक चक्रधर

भाग ४

नौ जून उन्नीस सौ सतासी को इतने सताये गये कि उस दिन दो जून का भोजन तक नसीब नहीं हुआ। जामिआ से दूरदर्शन, दूरदर्शन से सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, सूचना मन्त्रालय से विदेश मन्त्रालय, विदेश मन्त्रालय से पासपोर्ट कार्यालय, फिर दूरदर्शन.... फिर मन्त्रालय..... फिर दूसरे मन्त्रालय..... फिर दूरदर्शन। सुरेन्द्र शर्मा जी से ख़रीदी अपनी सैकिण्ड-हैण्ड फिएट को मैं इस कार्यालय से उस कार्यालय तक दौड़ा रहा था। पसीना-पसीना हो रहा था और भरपूर गर्मी के कारण कार भी निरंतर भाप छोड़ रही थी। कार जहाँ चाहती थी, रुक जाती थी। मैं अपनी मिल्टन की बोतल का ठण्डा पानी रेडिएटर में डालकर उसका मिजाज़ ठण्डा करता था। मेरा क़ुसूर इतना था कि मैंने काफ़ी समय पहले ही पासपोर्ट बनवा लिया था। जिनके पास पासपोर्ट नहीं था उनके मज़े थे। उनके लिये सारा काम दूरदर्शन की तरफ़ से हो रहा था। सोवियत संघ जाने के लिए उनका व्हाइट पासपोर्ट बनवाया जा रहा था।

सोवियत संघ के बारे में अधिकतम जानकारियाँ प्राप्त करने के लिये, मैं दिल्ली स्थित उनके सांस्कृतिक केन्द्र- '24, फ़ीरोज़ शाह रोड' गया। सोवियत संघ का इतिहास मनोयोग से पढ़ा, नोट्स बनाये। भारतीय लोककलाओं के बारे में साहित्य अकादमी की लाइब्रेरी में पुस्तकें खंगालीं। वहाँ मिली एक किताब श्याम परमार की, उसने बहुत मदद की मेरी।

इसके बाद लगभग एक सप्ताह तक सिलसिला चला पूर्वतैयारी की विभिन्न मीटिंग्ज़ का। विज्ञान भवन में 'भारत महोत्सव' का निदेशालय था। वहाँ कलाकारों और आयोजकों का तांता लगा रहता था। कौन-कौन से कलाकार जायेंगे, किन-किनकी प्रस्तुति 'अपना उत्सव' में

अच्छी रही थीं -देखा जा रहा था। अधिकारीगण कलाकारों को छाँटने और सूचियाँ बनाने में व्यस्त थे। अपुन भी अपनी अदना राय दे देते थे। पहली सूचियाँ तो बड़ी उदारतापूर्वक बनीं, फिर कटौती की जाने लगी। वहाँ मेरी निरन्तर उपस्थिति से कलाकार मुझे दूरदर्शन का बड़ा अधिकारी समझने लगे। मैं उनकी समस्याओं का निदान भी कर देता था। उनमें से बहुतेरे टोलीनायक मुझे दूरदर्शन कार्यक्रमों के कारण पहले से जानते थे। ख़ासकर 'अपना उत्सव', होली के कविसम्मेलनों और नये साल के कार्यक्रमों के कारण।

पश्चिम बंगाल के ढाली नृत्य के पैंतीस कलाकारों के जाने का प्रस्ताव आया लेकिन केवल सत्रह को ही अनुमति मिली। इसी तरह गोवा का तरंग ग्रुप, गुजरात का बेड़ा रास, मध्यप्रदेश का उराँव नृत्य, बिहार का छऊ, मणिपुर का लाई हारोबा, आन्ध्रप्रदेश का लंबाडी लोक-नृत्य, तमिलनाडु का कूटू नृत्य, सिक्किम का याक और बर्फीले शेर का नृत्य, राजस्थान का लंगा मांगणियार दल, घूमर दल, कठपुतली दल, पंजाब का गिद्दा समूह, असम का बिहू, पुतुल नाच, मार्शल आर्ट्स की टोलियाँ, सभी दलों के सदस्यों की संख्या कम की जा रही थी। जिसका चयन हो जाता था वह मुदित हो जाता और जिसको निकाला जाता था उसकी चेतना मुंदित हो जाती थी। मुंदी हुई आँखें जिनमें भरे होते थे आँसू।

मैं निश्चित रूप से जानना चाहता था कि कौन जायेंगे, कौन नहीं। आँखों देखा हाल सुनाते समय मैं हवा में तीर नहीं मारना चाहता था। मैं चाहता था कि सभी के बारे में सही और सधी हुई जानकारी दी जाये। थोड़ा-सा बोलने के लिये भी राम क़सम बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। मैं क्या, सभी लोग मेहनत कर रहे थे। दशरथ पटेल तरह-तरह के पोस्टर्स डिज़ाइन करा रहे थे। बंसी कौल बार्जेज़ के प्रारूप बना रहे थे। किसी के ज़िम्मे कॉस्ट्यूम्स का काम तो किसी के ज़िम्मे एअर टिकिट्स का।

ख़ूब रिहर्सल होते थे। हमारी दूरदर्शन की टीम अपने स्तर पर तैयारी कर रही थी। एक ग्रुप आकाशवाणी का भी था। उन दिनों दूरदर्शन के लोग, आकाशवाणी के लोगों से स्वयं को थोड़ा ऊँचा समझते थे। तीन-चार साल पुरानी रंगीनी जो टेलिविज़न में आयी थी, वह अधिकारियों के चेहरों पर भी दिखायी देती थी। लेकिन, इसमें शक नहीं कि कथ्य और विषय-वस्तु के मामले में मेहनत रेडियो वाले ज़्यादा करते थे। जमकर

रिसर्च करते थे, जहाँ से मिले सामग्री इकट्ठा करते थे। मेरा तो दोनों ओर आना रहा था। मुझे सब मदद करते थे, मैं सबकी मदद किया करता था।

दूरदर्शन की हमारी टीम के मुखिया थे अतिरिक्त महानिदेशक श्री शिव शर्मा, बेहद अनुभवी और संतुलित व्यक्तित्व। लाइव टैलीकास्ट को व्यावहारिक अंजाम देने के लिये दो प्रोड्यूसर थे श्री विजय कुमार और चौधरी रघुनाथ सिंह। विजय कुमार प्रायः खेल-कार्यक्रमों को कवर किया करते थे और रघुनाथ सिंह जी वही जो 'कृषि-दर्शन' के मुख्य प्रोड्यूसर थे। 'कृषि-दर्शन' कार्यक्रम वही जो सभी टीवी-धारियों को देखना पड़ता था क्योंकि कोई और टीवी चैनल था ही नहीं। मुख्य कैमरामैन डी. वी. मल्होत्रा थे, इंजीनियर थे सी.पी मलिक, पतले-दुबले ख़ुशमिजाज़ इंसान। मज़े की बात ये है कि ये सभी पहले से ही मेरे मित्र थे। और फिर हम चारों एंकर्स की टोली, यानी, राजीव महरोत्रा, कोमल जी. बी. सिंह, स्मृतिशेष विनोद दुआ और मैं। विनोद दुआ अधिक लोकप्रिय थे, क्योंकि दूरदर्शन पर निरंतर कार्यक्रम देते आ रहे थे।

अरे, सबा ज़ैदी को तो मैं भूले ही जा रहा था। वे भी एक वरिष्ठ प्रोड्यूसर थीं। क्या अंदाज़, क्या नखरे, किसी को अखरे तो अखरे। मीटिंग्स में वे हमेशा अंग्रेज़ी बोलती थीं और मैं सिर्फ़ हिन्दी। आत्मविश्वास से भरी हिन्दी। उसका प्रभाव कम पड़ता हो ऐसी बात नहीं थी। एक बार इंजीनियर सी. पी. मलिक मुझसे कहने लगे, 'अशोक जी! आप ऐसी हिन्दी बोलते हैं, जिसे सुनते रहने का मन करता है'। मैंने पूछा, 'मैं जो बात कहता हूँ वो अच्छा नहीं लगती'? वे बेलौस अंदाज़ में बोले, 'ऐसी बात नहीं है, पर सच्चाई ये है कि इन मीटिंग्स में कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। अरे हम हैं ट्रांसमीशन के आदमी, प्रोग्रामिंग से अपना क्या लेना देना। ऐसे ही बिठाये रखते हैं घण्टों'।

'कृषि-दर्शन' के मुख्य प्रोड्यूसर हमारे चौधरी रघुनाथ सिंह जी का बड़ा आदर-मान था। उनकी सबसे बड़ी ख़ूबी ये थी कि वे मीटिंग्स में प्रायः कुछ नहीं बोलते थे। इसका एक लाभ तो यह होता था कि उन्हें कोई जज नहीं कर सकता था कि उनकी अंग्रेज़ी अच्छी है या हिन्दी। सहमति अथवा असहमति में सिर्फ़ अपना सिर हिलाते थे, हल्का-सा, जिससे ये न लगे कि वे मीटींग में इंवॉल्व नहीं थे। एक बार, मीटिंग से निकलते हुए मैंने उनसे पूछा था, 'चौधरी साब! सभा में आपके सिवा सब बोले,

आप क्यों नहीं बोले'? चौधरी साहब कहने लगे, 'हमारे पुरखे बता गये हैं अक, आफीसर की अगाड़ी और घोड़े की पिच्छाड़ी ऐक्सन में नहीं आना'।

अपने-आप को कम करके आँकना चौधरी साहब की विशेषता थी। मुझे मालूम था कि चौधरी साहब की वन-ऑन-वन मीटिंग्स हर बड़े अधिकारी के साथ हुआ करती थीं। उन्हें ऐसे दुष्कर से दुष्कर कार्य दिये जाते थे, जो कोई दूसरा नहीं कर सकता। सबकी ख़बर रखते थे, सबकी ख़बर लेते थे। मुझे सदा उनका अगाध प्रेम मिला। मेरे द्वारा बनाई फ़िल्म 'जीत गी छन्नो' उन्होंने 'कृषि-दर्शन' में सौ से अधिक बार दिखायी थी। मेरी ग्रामीण पृष्ठभूमि जानते हुए एक बार उन्होंने मुझसे कहा, 'अशोक, आप हमारे 'कृषि दर्शन' पर एक साप्ताहिक कार्यक्रम शुरू कर दो'! मैंने विनम्रतापूर्वक कहा, 'सोचने के लिए थोड़ा समय दीजिये चौधरी साब'।

एक महीने बाद उनका फ़ोन आया, 'भई, और कितना सोच्चोगे'?

मैंने कहा, 'सोच तो लिया था पर बताना भूल गया। एक बहुत अच्छा ताज़ा नौजवान है, हरियाणे की पृष्ठभूमि का। तन का मन का बहुत सुन्दर। उसका नाम है अरुण जैमिनी। दूरदर्शन पर कभी एंकरिंग नहीं की है, पर औरों से अच्छी कर देगा'।

--'अरे नौजवान तो घणे सारे मेरे चक्कर काट्टैं, पर ये बताओ लट्ठ गाड़ देगा?

--जितना चाहो उतना गहरा! अशोक चक्रधर (शेष अगले अंक में)

आवश्यक सूचना

कविग्राम अपनी सम्पर्क सूची को अद्यतित करने के लिए आपसे अनुरोध करता है कि निम्न जानकारी कविग्राम के व्हाट्सएप नम्बर 8090904560 पर प्रेषित करें।

पूरा नाम / ईमेल पता / व्हाट्सएप नम्बर / पिनकोड / जन्मतिथि

यदि आप पूर्व में भी उक्त जानकारी दे चुके हैं और आपको अनवरत यह पत्रिका मिल रही है तो भी कृपया पुनः एक बार यह जानकारी प्रेषित करें ताकि हम अपनी सम्पर्क सूची की पड़ताल कर सकें।

सरला नारायण ट्रस्ट का वार्षिक समारोह

08 जनवरी, सिकंदराराऊ। कड़कड़ाती सर्दी और बरसात के मौसम में भी कविताओं ने हुमैरा मैरिज होम के ख़ूबसूरत सभागार में ऊष्मा भर दी। सरला नारायण ट्रस्ट का सालाना आयोजन पूरी गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। यश भारती डॉ विष्णु सक्सेना द्वारा स्थापित सरला नारायण ट्रस्ट के वार्षिक कार्यक्रम में डॉ सुमन दुबे तथा डॉ सोनरूपा विशाल को डॉ विष्णु सक्सेना गीत सम्मान से सम्मानित किया गया। दोनों रचनाकारों को ₹51000 के साथ अंगवस्त्र और सम्मान-पत्र प्रदान किया गया। प्रयास 2020 के विजेता श्री विपिन वत्सल को 'रमा प्रेम राठी सम्मान' तथा प्रयास 2021 के विजेता विद्या वैभव भारद्वाज को 'रमेश चौधरी सम्मान' के तहत ₹11000 की राशि, अंगवस्त्र तथा सम्मान-चिन्ह प्रदान किया गया। शिक्षक सम्मान के रूप में सरस्वती विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य रहे श्री तारेश अग्निहोत्री को 'विमला विश्वनाथ सहाय शिक्षक सम्मान' प्रदान किया गया। यह पूरा कार्यक्रम नगर के वरिष्ठ कवि स्वर्गीय श्री कृष्णकांत देव गर्ग को समर्पित था, इसलिए उनके परिवार के समस्त सदस्यों का शॉल और फूलमालाओं से स्वागत किया गया। कार्यक्रम के प्रथम सत्र में अध्यक्ष श्री सोम ठाकुर, मुख्य अतिथि डॉ राजेंद्र पेंसिया (उपाध्यक्ष आगरा विकास प्राधिकरण), समाजसेवी श्री उदय पुंढीर एवं विशिष्ट अतिथि शहर कोतवाल थे। कार्यक्रम का संचालन मुख्य ट्रस्टी सारांश सक्सेना ने किया तथा मुख्य सचिव श्री चित्रांश सक्सेना ने वर्ष भर की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

पुष्पांजलि के
नवीनतम अंक के
अवलोकनार्थ
क्लिक करें

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

KAVIGRAM.COM

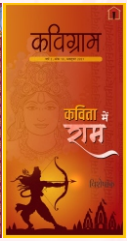

मुखपृष्ठ

प्रकाशन

काव्यलोक

समाचार लोक

पुराने चावल

फिल्म निर्माण

कविग्राम पत्रिका

कवि-सम्मेलन बुकिंग

कवि-सम्मेलन संग्रहालय

सम्पर्क

कविग्राम फेसबुक समूह

कविग्राम फेसबुक पेज

कविग्राम ट्विटर

कविग्राम इंस्टाग्राम

कविग्राम टेलीग्राम